Introduction

प्राक्कथन

भारतीय साहित्य की मौलिक विशेषता यह रही है कि सम्प्रदायिक प्रादेशिक वैशिष्ट्य को अपने निजी ढंग से रखते हुए भी उसकी मूल चेतना प्रायः एक-सी दिखाई पड़ती है। भारत की अनेक प्रादेशिक भाषाओं के साहित्य में इस मूल चेतना की एकता दृष्टिगोचर होती है, और इस प्रकार वह इस तथ्य को प्रमाणित करने में सक्षम है कि सांस्कृतिक दृष्टि से यह विशाल भारत एक और अखण्ड है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् जब हिन्दी और उसकी गौरवमय साहित्य-परम्परा का सम्बन्ध सम्पर्क देश के अन्य क्षेत्रों से विशेष रूप से आया तो अध्येताओं का ध्यान दो प्रकार की साहित्यिक प्रवृत्तियों के अनुशीलन की ओर विशेष रूप से गया —

(१) देश में अहिन्दी भाषी प्रदेशों में हिन्दी भाषा की एक दीर्घकालीन परम्परा प्राप्त होती है। अतः उसमें प्रधान कवियों तथा काव्यधाराओं में अनुशीलन हुए।

(२) प्रादेशिक भाषाओं के साहित्य एवं साहित्यकारों तथा हिन्दी की साहित्यिक प्रवृत्तियों तथा उनके अनेक साहित्यकारों में अनेक विध साम्य देख कर उनके तुलनात्मक अध्ययन हुए।

उपर्युक्त दोनों प्रकार के अनुशीलनों में हिन्दी शोध प्रवृत्तियों में एक नये अध्याय का श्री गणेश किया और क्षेत्रीय-शोध को एक विशेष शोध-प्रवृत्ति भी माना जाने लगा। प्रस्तुत अनुशीलन उक्त तुलनात्मक अध्ययन की सरणि का है। साहित्य एक विशाल रत्नाकर की भाँति है, जिसके अंतराल में अध्येता ज्यों ज्यों नीचे उतरता जाता है, त्यों त्यों अनमोल रत्नराशि उसे स उपलब्ध होती जाती है। हिन्दी से जयशंकर प्रसाद तथा गुजराती से सुप्रसिद्ध कवि न्हानालाल ने अपनी सर्जनशक्ति द्वारा एक प्रकार युग-निर्माण का महत्कार्य किया है। प्रस्तावित शोध कार्य इन दोनों

साहित्यकारों के काव्य के विविध पक्षों से तुलनात्मक अध्ययन से सम्बन्धित है ।

जिस प्रकार प्रसाद के साहित्य के विविध रूपों पर हिन्दी में अनेक महत्त्वपूर्ण शोध-कार्य किये जा चुके हैं और हो रहे हैं ; उसी प्रकार गुजराती में भी कवि न्हानालाल के व्यक्तित्व और कृतित्व को लेकर अनेक सराहनीय आलोचनाएं तथा शोधपरक अध्ययन हुए हैं । दोनों ही कवियों का योगदान समकालीन साहित्य में ऐतिहासिक महत्त्व रखता है । आज तक इन दोनों कवियों के किसी भी पक्ष को लेकर कोई शोध कार्य नहीं हुआ है । अतः इस सर्वथा नवीन विषय को लेकर लेखक ने प्रस्तुत अध्ययन का संकल्प हिन्दी और गुजराती के अनेक विद्वानों के परामर्श का लाभ उठाते हुए किया । न्हानालाल के जीवन एवं कृतित्व से हिन्दी जगत प्रसाद की अपेक्षा कम परिचित है ; इसलिये इस प्रबन्ध में कवि न्हानालाल की काव्य-कृतियों पर अधिक विस्तार से लिखा गया है । दोनों समयुगीन होते हुए, समान प्रवृत्तियों वाले भी थे । यह प्रबन्ध इन दोनों कवियों के काव्य के विविध पक्षों और सामान्य प्रवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है ।

यह सर्वविदित ही है कि प्रसाद जी विद्या और साहित्य-साधना के केतु काशी के थे और न्हानालाल जी गुजरात और विशेषकर सौराष्ट्र की संस्कृति से प्रभावित थे । यह भेद होते हुए भी दोनों मनीषियों के युग-बोध एवं सामाजिक तथा सांस्कृतिक दृष्टिकोण में पर्याप्त साम्य है । अतः सर्व प्रथम उन परिस्थितियों का सम्यक् अध्ययन आवश्यक हो जाता है ; जिनमें परिवेश के बीच उनका व्यक्तित्व विकसित हुआ ।

प्रथम अध्याय में दोनों कवियों की जीवनी, व्यक्तित्व और साहित्य सृजन की प्रवृत्ति को समझने के लिए भूमिका रूप में तत्कालीन राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक परिस्थितियों से परिचित होकर, पश्चात् जीवनी, व्यक्तित्व, काव्य कृतियों और सामान्य प्रवृत्तियों की तुलना की गई है । कवि प्रसाद और कवि न्हानालाल के समय भारत पराधीन था ; अतः आज के स्वतंत्र

भारत की प्रवृत्तियों से भिन्न प्रवृत्तियां उस समय थीं। तात्पर्य यह कि एक ही समय में प्रायः एक-सी प्रेरणाओं से उद्भूत तथा विभिन्न प्रान्तीय भाषाओं में रक्षित इस विशाल साहित्य के सम्यक् अनुशीलन के द्वारा ही हम भारतीय साहित्य की मूलभूत एकता का अनुसंधान कर सकते हैं ; और इसके लिए समकालीन कवियों तथा उनके कृतित्व का गंभीर तुलनात्मक अध्ययन अपेक्षित है।[1]

द्वितीय अध्याय में दोनों की जीवनी और व्यक्तित्व का अलग अलग अध्ययन करने के पश्चात् अधिनिबंध के मूल प्रतिपाद्य तुलनात्मक विवेचन को प्रस्तुत किया गया है। प्रसादजी की जीवनी तो प्रायः अनेक हिन्दी ग्रन्थों में प्राप्त होती है, किन्तु कवि न्हानालाल की जीवनी के अनेक महत्त्वपूर्ण पक्ष अभी तक अछूते रहे हैं। इसके लिए लेखक ने गुजराती में उपलब्ध विवेचनों के अतिरिक्त इतर स्रोतों से भी सामग्री एकत्रित की है। विशेष कर कवि न्हानालाल के सुपुत्र श्री आनन्द से प्राप्त सामग्री इस दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण है ; जिसे प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में पहले पहल प्रकाश में लाया गया है। दोनों ही कवियों की पारिवारिक परम्परा, धार्मिक आस्था, रुचि, प्रकृति, संस्कार तथा जीवन की विभिन्न परिस्थितियों के अनुभव भिन्न रूप में हमें दिखाई पडते हैं। अतः इस पक्ष की किंचित् विस्तार से चर्चा की गई है। प्रस्तुत अध्ययन द्वारा लेखक इस निष्कर्ष पर पहुंचा है कि प्रसादजी की आस्था और मान्यता शैवसाधना से संवृद्ध थी और शैवदर्शन का अध्ययन भी उनका गहरा था। इस विशेषता के कारण वे जीवन के तथ्यों की दार्शनिक व्याख्या तथा उनका रसमय विश्लेषण करने में सिद्ध हस्त थे। दूसरी ओर कवि न्हानालाल वैष्णव थे और उन पर पौराणिक आख्यानों का प्रभाव पडा। पिता श्री कवीश्वर दलपतराम से भी उन्हें यही विरासत प्राप्त हुई ; जो कि कवि न्हानालाल की आरंभिक कृतियों से प्रमाणित है। इस आख्यान परम्परा का विषय-वस्तु की दृष्टि से प्रभाव अंत तक रहा। इससे प्रकट है कि परम्परा से प्राप्त काव्य संस्कारों का कवि न्हानालाल ने समुचित विकास एवं

---

१ डा० भ्रमरलाल जोशी, सूरदास और नरसिंह मेहता : तुलनात्मक अध्ययन, पृ० १

संवर्धन किया । प्रसादजी को ऐसी पारिवारिक विरासत न मिल सकी ; किन्तु एक मनस्वी पुरुष की भाँति उन्होंने अपनी काव्याभिव्यक्ति के पथ का स्वयं संधान किया । अपने बनाये हुए मार्ग पर निरन्तर गतिशील रहे और अनुकूल या प्रतिकूल सभी परिस्थितियों में साहित्य साधना के पथ पर निर्पेक्ष भाव से चलते रहे । कवि न्हानालाल का निजी जीवन व्यक्तिगत पारिवारिक, सामाजिक आदि सभी दृष्टियों से सुखद कहा जा सकता है । जयशंकर प्रसाद के जीवन में दुखद और वेदनापूर्ण परिस्थितियाँ अधिकांश समय तक रही । इन परिस्थितियों ने जहाँ उन्हें अन्तर्मुखी बनाया वहाँ दूसरी ओर जीवन के दुख और वेदना के प्रति अत्यधिक संवेदनशील भी बनाया । यह संवेदनशीलता उनके काव्य का प्राण है । तीसरी उल्लेखनीय बात प्रसाद जी के दुहरे व्यक्तित्व की है । आर्थिक दृष्टि से वे एक ओर व्यापारी थे तो दूसरी ओर साहित्यकार का भी साधनामय जीवन जी रहे थे । व्यावहारिक जगत् में सामाजिक और राजनैतिक गतिविधियों से अलग रहकर भी वे उसकी संश्लेषणा को अपनी रचनाओं में सशक्त रूप में अभिव्यक्त करते थे । यह दुहरा व्यक्तित्व कवि न्हानालाल में नहीं दिखाई पड़ता । वे आदि से अंत तक तथा भीतर और बाहर एक बुद्धिजीवी सभीपी, सामाजिक और साहित्यिक गति विधियों का संचालन भी सोत्साह करते थे । अतः प्रसाद की-सी एकान्त सेवी रुचि उनमें नहीं थी । इस विशेषता के कारण न्हानालाल प्रसाद की भाँति संवेदनशील होकर भी अंतर्मुखी वृत्ति के न हो पाये । अंतिम उल्लेखनीय तथ्य यह है कि दोनों कवि लगभग एक ही काल खण्ड के होकर भी उनके काल विस्तार में पर्याप्त अंतर है । प्रसादजी को जीवन के केवल ४८ वर्ष मिले और न्हानालाल को ६९ वर्ष । अतः यह स्वाभाविक ही है कि न्हानालाल की कृतियों की संख्या तथा परिमाण-प्रसादजी से अधिक है ; किन्तु जैसा कि हम यथास्थान निर्दिष्ट कर आये हैं कि दोनों ही साहित्यकारों का अपनी अपनी भाषा के साहित्य में ऐतिहासिक महत्त्व एक-दूसरे से कम नहीं है ।

तृतीय अध्याय में जयशंकर प्रसाद और कवि न्हानालाल की काव्य-कृतियों का कालक्रम से परिचय दिया गया है और तद्विषयक कतिपय नये तथ्यों को भी प्रकाश में लाये गये हैं । इस अनुशीलन के उपरांत विषयवस्तु और शैली की दृष्टि

से दोनों की कृतियों के वर्गीकरण तथा उनके तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किये गये हैं। इसके आधार पर लेखक इस निष्कर्ष पर पहुंचा है कि दोनों ही कवियों के प्रकृतिपरक, प्रेमपरक और सौन्दर्यपरक गीतों में वस्तुगत साम्य है। आख्यानक काव्य भी दोनों ने प्रस्तुत किये हैं। यदि कहीं अंतर दिखाई पडता है तो यह है कि प्रसादजी ने न्हानालाल की भांति भक्तिपरक रचनाएं प्रायः नहीं लिखी। दूसरी उल्लेखनीय बात यह है कि न्हानालाल ने लोकगीतों की परम्परा को भी अनेक रचनाओं में अपनाया। इस प्रकार की प्रवृत्ति भी प्रसादजी में नहीं दिखाई पडती। छंदबद्ध काव्य दोनों ही कवियों ने लिखे हैं, किन्तु प्रसादजी के तद्विषयक प्रयोग उनकी मौलिक काव्याभिव्यक्ति के परिचायक है, जबकि कवि न्हानालाल के छंदबद्ध काव्य प्रायः परम्परा का ही अनुगमन करते रहे। यह विवेचन भी पिछले दोनों अध्यायों की भांति लेखक का अपना निजी मौलिक प्रयास है; जिसकी आधारभूत सामग्री संबद्ध रचनाओं से ली गई है।

चतुर्थ अध्याय में दोनों ही कवियों के भावपक्ष का अनुशीलन किया गया है। इस अनुशीलन में उनके काव्य की साम्य और वैषम्य की भूमियों पर भी यथास्थान विचार किया गया है। वसंत ऋतु और उसके प्रतीकात्मक भावनाओं के प्रति दोनों में व्यापक आकर्षण दिखाई पडता है। जीवन के क्षेत्र में इसके प्रतीकात्मक अर्थ पर भी दोनों ने पर्याप्त गीत लिखे हैं। राष्ट्रीय भावधारा और विशेष कर भारत के प्राचीन गौरव के प्रति आकर्षण एवं गर्व की भावना – दोनों की कृतियों में प्राप्त होती है। इस अनुशीलन द्वारा लेखक इस निष्कर्ष पर पहुंचा है कि भारत की सांस्कृतिक परम्परा दोनों की राष्ट्रीय भावना की सब से प्रेरक शक्ति नारी जीवन के विविध भावपूर्ण पक्षों को लेकर दोनों ही कवियों ने अत्यंत मार्मिक चित्र प्रस्तुत किये हैं; किन्तु एक व्यावर्तक अंतर जो लेखक को दृष्टिगोचर होता है वह यह है कि कवि न्हानालाल प्रधानत्या दाम्पत्य रस के कवि ठहरते हैं तो दूसरी ओर प्रसाद जी की नारी भावना किसी ऐसे घेरे में आबद्ध नहीं है। उनकी नारी शान्ति, शक्ति, श्रद्धा, विश्वास आदि सभी को लिए हुए भी उन्हें अपेक्षा है कि वह जीवन के समतल में भी पीयूष श्रोत सी बहा करे। इस विवेचन में दोनों ही कवियों की कृतियों और उनसे

सम्बन्धित विवेचनों से सहायता ली गई है ; किन्तु अनुशीलन गत निष्कर्ष लेखक के अपने हैं ।

पंचम अध्याय में दोनों कवियों की कृतियों के कलापक्ष का अनुशीलन किया गया है । इस अनुशीलन में भारतीय तथा पाश्चात्य समीक्षा पद्धति का यथा आवश्यक आधार लिया गया है । यह अध्ययन भाषा, शैली, छन्द, अलंकार योजना, बिम्ब, प्रतीक तथा काव्य के रूप आदि पक्षों को दृष्टिपथ में रख कर किया गया है । इस अध्ययन द्वारा लेखक इस निष्कर्ष पर पहुंचा है कि अभिव्यक्ति शिल्प की दृष्टि से दोनों के कृतित्व में पर्याप्त अंतर है । इसमें संदेह नहीं कि प्रसादजी की ही भांति कवि न्हानालाल ने अपनी भाषा की काव्य परम्परा को नई अभिव्यंजना शैली प्रदान की । उनकी इस शैली - जिसे " डोलन-शैली " कहा जाता है - के विषय में इस अध्ययन में स्वतंत्र रूप से विचार किया गया है, किन्तु प्रसाद की भांत वे निरन्तर प्रयोगधर्मी नहीं दिखाई पड़ते । प्रसाद के कलात्मक प्रयोगों और चिन्तन के समायोजन के परिणाम स्वरूप " कामायनी " जैसी काव्यकृति हिन्दी साहित्य को प्राप्त हुई । कवि न्हानालाल ने " कुरुक्षेत्र " और "हरसंहिता" जैसी आख्यानक कृतियां लिखी । इनका शिल्प-शैली की दृष्टि से अभिन्न है, आकार की दृष्टि से इन्हें प्रबन्ध-काव्य कहा जा सकता है किन्तु वस्तुसंगठन कहीं कहीं शिथिल है, दूसरी ओर प्रसादजी वस्तु संगठन और वस्तुविन्यास दोनों में " कामायनी " के अंतर्गत कामायनी के माध्यम से बहुत आगे बढ़ जाते हैं । " कामायनी " जैसी कृति कवि न्हानालाल अवश्य न दे सके ; किन्तु इसे छोड कर शेष काव्य कृतियों में शिल्पगत भिन्नता के होते हुए भी उनकी गुणवत्ता को एक-दूसरे के समकक्ष रखा जा सकता है । इस प्रकार कलापक्ष का तुलनात्मक विश्लेषण लेखक का निजी प्रयास है ; जिसकी आधारभूत सामग्री आलोच्य कृतियों और तद्विषयक विवेचनों से ली गई है ।

षष्ठ अध्याय आलोच्य कवियों की विचारधारा के विविध पक्षों से संबंधित है । इस अध्ययन को उनकी रचनाओं से प्राप्त तथ्यों तक ही सीमित रखा गया है । इसमें विशेष कर उनके सामाजिक और दार्शनिक चिन्तन, प्रेमदर्शन एवं आध्यात्मिक

विचारधारा पर पृथक् पृथक् विचार करके दोनों की तुलना की गई है। इस तुलना में उनकी पृष्ठभूमि को भी स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन लेखक का अपना मौलिक प्रयास है।

सप्तम् अध्याय उपसंहार का है। इसमें इन कवियों के सभी पक्षों पर विहंगम दृष्टि डालते हुए दोनों के काव्यों की मूलचेतना को स्पष्ट करने का सोचा गया है। अध्यायों से प्राप्त होनेवाले निष्कर्षों का समग्रतया मूल्यांकन भी प्रस्तुत करना लेखक ने आवश्यक समझा है। तदुपरांत लेखक ने इस पर भी विचार किया है कि इनके साहित्यिक व्यक्तित्व के अन्य महत्त्वपूर्ण पक्ष भी है। इन दोनों महान् कृतिकारों ने कविता के अतिरिक्त नाटक, निबंध, तथा उपन्यास इन विधाओं में भी अपनी प्रतिभा और साधना का योग दिया है। प्रसादजी ने इनके अतिरिक्त कहानियां भी लिखी और हिन्दी कहानिकारों के बीच उनका स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण भी है। साहित्य साधना का यह पक्ष कवि न्हानालाल से अछूता रहा। दूसरी ओर कवि न्हानालाल ने बडी संख्या में संस्कृत के नाटकों और उपनिषदों के गुजराती अनुवाद भी किये। निबन्धकार के रूप में कवि न्हानालाल अपेक्षाकृत निर्बल कहे जा सकते हैं। उपन्यास के क्षेत्र में दोनों की दिशाएं भिन्न हैं। काव्य के अतिरिक्त इन दोनों कवियों का सब से महत्त्वपूर्ण योगदान नाट्य साहित्य के क्षेत्र में है। इसे देखते हुए लेखक ने अंत में इस संभावना पर भी विचार किया है कि इस दृष्टि से भी एक स्वतंत्र एवं खोजपूर्ण अध्ययन के लिए पर्याप्त क्षेत्र विद्यमान है। लेखक को आशा है कि अध्येताओं का ध्यान इस ओर आकृष्ट होगा।

अपने इस शोध कार्य के करने में मैं सर्व प्रथम म० स० विश्वविद्यालय, बडा-संकाय, हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष परम आदरणीय डा० मदनगोपालजी गुप्त का बडा कृतज्ञ हूं; जिनके निर्देशन में यह शोध-प्रबन्ध तैयार किया गया है। इस शोध कार्य के करने में समय समय पर जो जो कठिनाइयां मेरे सामने उपस्थित हुई; उनको दूर करने तथा अपने सत्परामर्श द्वारा मार्ग-निर्देश करने में आपने मेरी बडी सहायता की है।

इस शोध कार्य के विषय का बीज रूप में मार्गदर्शन गुजरात विश्व-विद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डा० अम्बाशंकर नागरजी से प्राप्त हुआ । महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय ; कला-संकाय गुजराती विभाग के रीडर " डा० अमी " से कवि न्हानालाल से संबंधित पूर्ण मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है । अप्राप्य सामग्री देने के लिये मुझे न्हानालाल के सुपुत्र श्री आनन्दजी ने बड़ी सहायता की है । कवि न्हानालाल से संबंधित सामग्री प्राप्त करने के लिये मुझे बम्बई जाना पड़ा । वहाँ बम्बई विश्व विद्यालय के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष डा० सी० एल० प्रभातजी ने तद्विषयक सामग्री प्राप्त करने में मेरी अपूर्व मदद की है । कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागा-ध्यक्ष श्रद्धेय डा० रामेश्वरलाल खण्डेलवाल जी ने इस शोध-प्रबन्ध से संबंधित अमूल्य सूचनाएं दी थीं, जिससे मैं यह कार्य पूर्ण रूप से संपन्न कर सका । बम्बई में डा० धनवंत शाह ने इसी संबंध में मेरी पर्याप्त सहायता की एवं उनके गुरुजी श्रद्धेय डा० रामप्रसाद बक्षीजी का भी आशीर्वाद प्राप्त करवाया + वलसाड निवासी गुजराती कवि "उशनस् " जी ने भी मुझे कवि न्हानालाल के संबंध में पर्याप्त मार्गदर्शन दिया । महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय कला-संकाय के डीन डा० रमणभाई एन० महेता साहब ने तो मुझे इस कार्य से पूर्णतः प्रेरित किया " सर्व धर्मान परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज " । अतः इन सब के प्रति ऐसक कृतज्ञता का अनुभव करता है ।

तदुपरांत मेरे परम सहायक - डा० सुरेशचन्द्र कांग्रावाला, डा० कु० प्रेमलता बाफना, डा० रमणलाल पाठक, डा० कान्तिभाई शाह, श्री रमणभाई तलाटी, डा० एस० के० देसाई, डा० सोमाभाई पारेख, डा० हर्षदभाई त्रिवेदी और मेरी भूतपूर्व छात्राएं कु० हेमलता पटेल एवं कु० दीपिका शाह आदि की इस कार्य में पर्याप्त सहायता देने के लिए उनका हार्दिक आभार मानता हूं । मेरे परम मित्र डा० पाध्याय और चुन्नभाई अमीन हंसा महेता पुस्तकालय में पुस्तकीय सामग्री प्राप्त करने में सहायभूत हुए हैं अतः मैं उनका भी बड़ा कृतज्ञ हूं ।

गजानन शिवनाथ पुरोहित

हिन्दी विभाग,
कला-संकाय,
महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा ।